भूमण्डलीकरण (Globlization)

- आशय
- विभिन्न परिपेक्ष्य
  1. उदारवादी
  2. मार्क्सवादी
  3. परिवर्तनवादी
  4. पर्यावरणवादी
- प्रभाव
  1. आर्थिक क्षेत्र में
  2. राजनैतिक ..
  3. सांस्कृतिक ..
- भूमण्डलीकरण प्रक्रिया
  1. विकासशील देशों का
  2. विकसित देशों का

⇒ वस्तु, वित्त, सेवाओं का आदान-प्रदान भूमण्डलीकरण कहलाता है।

मार्क्सवादी = सन्देहवादी

⇒ पर्यावरणवादी कहते है कि भूमण्डलीकरण से उपभोक्तावाद ही बढ़ता है।

वैश्वीकरण का आशय -

वैश्वीकरण को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया जाता है, कुछ लोगों ने इसे प्रक्रिया के रूप में अन्य लोगों ने इसे नीति के रूप में तथा दूसरे इसे बाजारवादी रणनीति के रूप में भी परिभाषित करते हैं। इसे विचारधारा के रूप में भी व्यक्त किया गया, इसे परिभाषित करते हुए ओमाहे ने कहा कि भूमण्डलीकरण एक सीमाविहीन विश्व की संकल्पनाएँ है जिसमें भौगोलिक बाधाएँ अप्रासंगिक होती जा रही तथा लोगों में देशकाल की भिन्नता भी समाप्त हो रही है। वाटर्स आदि ने भूमण्डलीकरण को एक विश्व के रूप में परिभाषित किया। मैक्लुहान ने भूमण्डलीकरण को वैश्विक गाँव की संज्ञा दी। शोल्टे के अनुसार वैश्वीकरण द्वारा एक पार विश्व तथा पार-सीमा का विकास हो रहा है, जिससे लोगों के मध्य सम्बन्ध भौगोलिक दायरों के बाहर भी विकसित हो रहे हैं।

Scanned with CamScanner

सामान्यतः वैश्वीकरण का अभिप्राय एक देश की अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण है, इसे वस्तु सेवा एवं वित्त के मुक्त आदान-प्रदान के रूप में भी देखा जाता है। समकालीन विश्व में वस्तुओं का उत्पादन विश्वव्यापी है इसका विपणन भी पूरे विश्व में किया जा रहा है। विश्व में अर्थव्यवस्थाओं के एकीकृत होने का ही परिणाम है कि U.S. की आर्थिक मंदी का परिणाम विश्वव्यापी देखा जा सकता है। विद्वानों के अनुसार वस्तु, सेवा और वित्त का आदान-प्रदान पहले भी होता था परन्तु ये एकपक्षीय था परन्तु समकालीन में ये बहुपक्षीय है। इसी बहुपक्षीय आदान-प्रदान को प्रभावी बनाने हेतु W.T.O. की स्थापना 1995 में हुई। वस्तु, सेवाओं और वित्त के मुक्त आदान-प्रदान को सूचना, संचार क्रांति ने व्यावहारिक एवं सम्भव बना दिया है ∴ भूमण्डलीकरण मूलतः आर्थिक संकल्पना है लेकिन इसका राजनीतिक पक्ष भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

भूमण्डलीकरण के आयाम -

भूमण्डलीकरण एक जटिल संकल्पना है जिसके अनेक आयाम हैं। आर्थिक दृष्टि से दुनिया की कोई भी अर्थव्यवस्था विश्व अर्थव्यवस्था से पूर्णतः अलग-थलग नहीं रह सकती अतः प्रत्येक देश का दूसरे देशों के साथ जटिल आर्थिक सम्बन्ध विकसित हुए। इस युग में उत्पादों का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हो गया, वस्तुओं और वित्त का मुक्त आदान-प्रदान हो रहा है ये वस्तुओं और वैश्विक दोनों रूपों में देखा जा सकता है। शीत युद्ध में साम्यवाद के विघटन के बाद पूरे विश्व में उदारीकरण एवं निजीकरण नीतियों का प्रयोग हो रहा है।

Scanned with CamScanner

विकासशील देश इसे संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम के माध्यम से अपना रहे हैं। पूर्व-साम्यवादी देश भी पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली को अपना चुके हैं और पूर्वी यूरोपीय देश भी E.U. में सम्मिलित हो गए हैं।

भूमण्डलीकरण का सांस्कृतिक आयाम -

सांस्कृतिक रूप में भूमण्डलीकरण को मैकडोनाल्डाइजेशन भी कहते हैं। विश्व में एक वैश्विक उपभोक्ता वस्तु का निर्माण हो रहा है जिसके प्रभाव से सांस्कृतिक भिन्नता, क्षेत्रीय विविधता समाप्त हो रही है और एक प्रकार दुनियाँ का निर्माण हो रहा है। आज पूरे विश्व में हालीवुड की फिल्में देखी जाती हैं, NIKE के जूते पूरे विश्व में पहने जाते हैं अतः एक वैश्विक प्रोडक्ट बाजारों में उपलब्ध है। विचारकों के अनुसार पूँजीवादी व्यवस्था में इन वस्तुओं के उपभोग को बढ़ाने हेतु संचार - माध्यमों का प्रयोग किया जाता है अतः लोगों में भौतिक आवश्यकताएँ उत्पन्न की जाती हैं

राजनैतिक आयाम -

वैश्वीकरण के प्रभाव से क्षेत्रीय संगठनों का निर्माण हो रहा है, विश्व नागरिकता की संकल्पना डेविड हेल्ड ने प्रस्तुत की है और उनके अनुसार विश्व के एक सं. राष्ट्रीय नागरिक समाज का निर्माण हो रहा है। अं. राज. में राज्य का केन्द्रीय महत्व कम हो रहा है क्योंकि व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियाँ राज्यों के मध्य के बजाय बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मध्य हो रही है ∴ राज्य की परम्परागत संकल्पना में परिवर्तन हो रहा है।

Scanned with CamScanner

वैश्वीकरण के सम्बन्ध में विभिन्न दृष्टिकोण -

वैश्वीकरण के संदर्भ में अतिवैश्वीकृत दृष्टिकोण के अनुसार यह पूरे विश्व की सम्पन्नता हेतु महत्वपूर्ण साधन है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप पूरे विश्व में अवसरों की वृद्धि हुई है। सस्ती वस्तुएँ और गुणवत्तापूर्ण वस्तुएँ पूरे विश्व में उपलब्ध हैं। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप राष्ट्र-राज्य की केन्द्रीय स्थिति के बजाए अन्य संगठनों का महत्व बढ़ता जा रहा है। पूरे विश्व में वित्त एवं मुद्रा के आदान-प्रदान में भारी वृद्धि हुई। संचार के नए साधनों और तकनीकि के द्वारा सूचनाओं का प्रसार पूरे विश्व में सुलभ हो गया। नव-उदारवादियों ने वैश्वीकरण का समर्थन करते हुए कहा इससे विश्व में जटिल अन्तर्निर्भरता का विकास हुआ। अतः भूमण्डलीकरण सभी हेतु लाभप्रद है। नव-उदारवादियों के ये तर्क शास्त्रीय उदारवादियों के आधार पर ही निर्मित हैं। रिकार्डो जैसे शास्त्रीय उदारवादियों ने <u>तुलनात्मक लाभ का सिद्धान्त</u> प्रस्तुत करते हुए कहा कि मुक्त व्यापार द्वारा प्रत्येक राज्य उत्पादन एवं निर्यात में कुछ विशेष वस्तुओं के सन्दर्भ में विशेषज्ञता प्राप्त कर लेगा। ∴ मुक्त व्यापार तथा स्पर्धा को तुलनात्मक रूप में लाभ प्राप्त होगा। रिकार्डो के अनुसार मुक्त व्यापार के अनुसार निम्न दो शर्तें पूर्ण होनी चाहिए -

(1) विश्व में वस्तुओं का अबाध आदान-प्रदान होना चाहिए।

(2) राज्यों में मुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए, एकाधिकार वादी प्रवृत्तियों का अभाव होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

1980 के दशक में U.S. और यूरोप में नव-उदारवादी नीतियों का प्रयोग किया गया, और कल्याणकारी राज्य की परिकल्पना परिवर्तित करके मुक्त व्यापार पर बल दिया गया। 80 के दशक में सोवियत संघ की आर्थिक स्थिति खस्ताहाल होने लगी जबकि 80 की शताब्दी देश आर्थिक वृद्धि के मार्ग पर तीव्रता से बढ़ने लगे। सो. संघ के विघटन के बाद पूरे विश्व में भूमण्डलीकरण का व्यापक प्रसार हुआ और (1995) W.T.O. की स्थापना द्वारा मुक्त व्यापार को बहुपक्षीय बनाने का संस्थागत प्रयास भी किया गया।

संन्देहवादियों का दृष्टिकोण :-

सन्देहवादियों के अनुसार भूमण्डलीकरण के नाम पर पूंजीवादी नीतियों को ही वैधता प्रदान की जा रही है, इनके अनुसार यह मूलत: पूंजीवादी विकसित राष्ट्रों की सीमाओं में संचालित हो रही है। इनके अनुसार भूमण्डलीकरण एक क्रान्तिकारी, आर्थिक, तकनीकि शक्ति नहीं है बल्कि यह मूलत: वैचारिक शक्ति है। इनके दृष्टिकोण के अनुसार नव उदारवादी भूमण्डलीकरण की नीतियाँ वाणिज्यिक लाभों को समर्पित है। भूमण्डलीकरण के युग में निगमसंगठनों की शक्ति में वृद्धि हुई है। राज्य के कल्याणकारी राज्य समाप्त हुए, पूरे विश्व में असमान, आर्थिक विषमता में वृद्धि हो रही है।

Scanned with CamScanner

विकासशील देश इस प्रक्रिया में शामिल शक्तों की भूमिका में हैं। भूमण्डलीकरण युग में विरोधाभासी प्रवृत्ति विद्यमान है जिसमें उत्पादों के सभी भण्डारों के बावजूद, उत्पादन स्थानीय आवश्यकताओं के लिए न होकर वैश्विक बाजार के लिए हैं। 1980, 90 के दशक में भूमण्डलीकरण नीतियों के परिणामस्वरूप अमीरी गरीबी के जीवन स्तर में गिरावट हुई यहाँ अभी भी 40% लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे हैं। अतः भूमण्डलीकरण वस्तुतः पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली का ही वैश्विक विस्तार है। पराश्रितता सिद्धान्तकारों ने पहले ही यह सिद्ध कर दिया कि इस पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली में विकासशील देश सदैव अल्पविकसित बने रहेंगे, वे कभी भी विकसित देशों की श्रेणी में नहीं पहुँच सकते। वालरस्टीन ने विश्व पूँजीवादी व्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था की संज्ञा दी। उनके अनुसार इस विश्व पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में औपनिवेशिक मूल्य, अर्द्ध परिधि एवं परिधि से कोर देशों को प्राप्त होता है। कोर या पूँजीवादी देश परिधि एवं अर्द्ध परिधि दोनों प्रकार के देशों का शोषण करते हैं।

रावर्ट कॉक्स के अनुसार भूमण्डलीकरण की निम्न विशेषताएँ हैं-

(A) इसकी प्रकृति सोपानिक है।

(B) भूमण्डलीकरण को उन्होंने (ऊपर वालों को लाभ नीचे वालों को नहीं) अन्तर्निर्भरता के बजाय निर्भरता के रूप में देखा

Scanned with CamScanner

(C) आर्थिक शक्तियों का केन्द्रीकरण कुछ दुनिया औद्योगिक देशों में केन्द्रित होता जा रहा है, जिसमें U.S., जापान और पश्चिमी यूरोप के देश हैं। ~~अतः सबसे~~

(D) इनके अनुसार आर्थिक भूमण्डलीकरण द्वारा विकसित देशों को लाभ, तीसरी दुनिया के देशों को हानि।

(E) इनके अनुसार वैश्वीकरण पूंजीवाद का अन्य रूप है।

(F) इनके अनुसार भूमण्डलीकरण को प्रभावी करने हेतु U.S. जैसी महाशक्तियों द्वारा वैचारिक सहमति उत्पन्न करने का प्रयास किया जा रहा है।

अतः सन्देहवादियों के अनुसार भूमण्डलीकरण, राष्ट्र-राज्यों से परे कोई घटना न होकर शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा संचालित नीतियाँ हैं। : भूमण्डलीकरण के इस युग में राज्य के पूर्णतः विलोपित होने की कल्पना भी अतार्किक है।

परिवर्तनवादी दृष्टिकोण -

वैश्वीकरण के समर्थक और विरोधी अतिवादी तर्क प्रस्तुत करते हैं, अतः परिवर्तनवादियों ने एक मध्यममार्गीय सन्तुलित दृष्टिकोण का विकास किया, जिसके अनुसार भूमण्डलीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष हैं। वैश्वीकरण के इस युग में विश्व में अन्तरनिर्भरता में कमी हुई है। रोग, उग्रवाद एवं चिंता का पूरे विश्व में

Scanned with CamScanner

समान - प्रधान हो रहा है। राष्ट्र - राष्ट्रों की केन्द्रीय सीमा नहीं प्रभावित हुई। विश्व में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा विश्व के 30% व्यापारिक आदान - प्रदान हो रहे हैं। अतः यह सत्य है कि पार-राष्ट्रीय समस्याओं में वृद्धि हुई है। भूमण्डलीकरण का दूसरा भी पक्ष है जिससे इनकार नहीं किया जा सकता, इसके लाभ सभी को समान रूप से प्राप्त नहीं हो रहे हैं। ये विश्व-व्यापी माना है परन्तु समूचे विश्व में इसे स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई है। और कई क्षेत्रों और राज्यों को इससे हानि भी हो रही है। उदा० के लिए 1996 में मैक्सिको का आर्थिक संकट 1997-99 में दक्षिणी एशियाई देशों का वित्तीय संकट, जिसके साथ इन क्षेत्रों में आर्थिक असमानता में वृद्धि हुई। अतः विकासशील देशों के सामने वैश्वीकरण से पलायन करने का विकल्प नहीं है क्योंकि समूची विश्व व्यवस्था से कोई भी राज्य पूर्णतः अलग-थलग नहीं रह सकता बल्कि भूमण्डलीकरण की नीतियों का प्रयोग करने में तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ने में अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार इसे स्वीकार करना चाहिए तथा परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार इनका प्रयोग किया जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप वैश्वीकरण को अपनाकर भी अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो सके।

Scanned with CamScanner